

SMT. BAOA DEVI

Smt. Baoa Devi, from an illustrious village of Jitwarpur, Madhubani district of Bihar is one of the pioneers of Madhubani painting, an ancient folk art the region is known for. According to folklore, when the district of Madhubani was gearing up for the festivities ahead of the wedding of Ram and Sita, king Janak, the bride's father, ordered the villagers to dress up their walls with paintings of mythological events and geometric patterns to celebrate the occasion. Since then, every wedding in the region has followed the ritual, decorating the bridal chamber or kohbar ghar with intricate linear paintings in bright colours. The wall art became a local tradition.

2. Born on December 25, 1942, Smt. Baoa Devi was the youngest among the first group of artists who transported traditional Maithili patterns onto white sheets of paper when Pupul Jayakar, director, All India Handicrafts Board, sent Mumbai artist Bhaskar Kulkarni to Madhubani in Bihar in 1966. Born into a Brahmin family, Baoa Devi was married off at the age of 12 during a period of transition for the region.

3. Commercial success has followed the recognition her works have earned. Her work has been widely exhibited right from in India to Paris, Japan and many American countries. Smt. Baua Devi got the honor of National Award in year 1984, Award from Govt. of Japan in 1994 and Award from Haryana Tourism in 1996. Her paintings have been displayed in numerous International level exhibitions in Japan (more than 10 times), France (Twice), Germany, Spain and London.

4. Smt. Baoa Devi's major works exhibit the legend of the Nag Kanya (called `vishhara' in local folklore), a snake maiden, who like a mermaid has the upper torso of a beautiful woman and the lower body of a snake, a motif of both regeneration and destruction. While it has a mythological resemblance to Manasa, the snake goddess revered in east India, it also draws from the reptiles that inhabited the village where Smt. Baoa Devi lived. The personal and mythological references make it one of her favourite themes, one that she has explored several times through her career.



श्रीमती बऊवा देवी

श्रीमती बऊवा देवी, जो बिहार के मधुबनी जिले के सुप्रसिद्ध जितवारपुर गांव की निवासी हैं, प्राचीन लोक कला मधुबनी पेंटिंग, जिसके लिए यह क्षेत्र प्रसिद्ध है, के प्रणेताओं में से एक हैं। लोकगाथा के अनुसार राम-सीता के विवाह के समय जब यह मधुबनी क्षेत्र विवाह समारोह की तैयारी में लगा हुआ था, तब कन्या के पिता महाराज जनक ने ग्रामवासियों को आदेश दिया कि वे अपने घरों की दीवारों को पौराणिक घटनाओं एवं ज्यामितीय संरचनाओं की चित्रकारी कर इस शुभ मुहूर्त में उत्सव मनाएं। तब से लेकर आज तक इस क्षेत्र में प्रत्येक विवाह में इस प्रथा का अनुपालन किया जाता है जिसके तहत आकर्षक रंगों में जटिल संरेखीय चित्रकारी द्वारा वधू गृह या कोहबर घर को सजाया जाता है।

2. आपका जन्म 25 दिसंबर, 1942 को हुआ था। आप आयु में उन उत्कृष्ट कलाकारों के समूह में सबसे छोटी थीं जिन्होंने पारंपरिक मैथिली चित्रकारी को उस समय धवल कागज़ पत्रों पर उकेरा जब अखिल भारतीय हस्तकला बोर्ड के निदेशक पुपुल जायकर ने वर्ष 1966 में मुम्बई के कलाकार भास्कर कुलकर्णी को मधुबनी, बिहार भेजा। आपका जन्म ब्राह्मण परिवार में हुआ एवं 12 वर्ष की आयु में ही आपकी शादी उस समय हुई जब यह क्षेत्र संक्राति के दौर से गुजर रहा था।

3. आपके उत्कृष्ट कार्यों को समुचित पहचान मिली एवं इसके परिणामस्वरूप वाणिज्यिक सफलता प्राप्त हुई। आपकी कृतियां भारत से लेकर पैरिस तक, जापान एवं कई अमेरिकी देशों में विस्तृत रूप से प्रदर्शित की जाती हैं। आपको वर्ष 1984 में राष्ट्रीय पुरस्कार, वर्ष 1994 में जापान सरकार से पुरस्कार तथा वर्ष 1996 में हरियाणा पर्यटन से पुरस्कार प्राप्त हुए। आपके चित्रों की प्रर्दशनी अनेकानेक बार अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शिनियों में जापान में (10 से अधिक बार), फ्रांस (दो बार), जर्मनी, स्पेन और लंदन में प्रदर्शित की गईं।

4. आपकी प्रमुख कृतियां नागकन्या (स्थानीय लोकगाथा मे 'विषहारा' के नाम से ज्ञात) की लोकगाथा को दर्शाती हैं। नागकन्या एक नाग कुमारी है जिसका जलपरी की तरह शरीर का उर्ध्व भाग अतीव सुंदरी स्त्री का है एवं अधोभाग सर्प का है, जो सांकेतिक रूप से पुनरोत्पादन एवं विनाश को दर्शाता है। जबकि इसका पूर्वोत्तर भारत में प्रसिद्ध नागदेवी मनसा के साथ पौराणिक साम्यता है, इसकी संरचना में आपने अपने गांव के सर्प से भी प्रेरणा ग्रहण की है। वैयक्तिक एवं पौराणिक संदर्भों से समिश्रित यह विषय आपकी रूचि का है एवं आपने अपने संपूर्ण कला जीवन में इस विषय के विभिन्न आयामों का अनेकानेक बार अनुसंधान किया है।